कुमार-बिमल के साहसिक कारनामे

यक्ष का खजाना

हेमेन्द्र कुमार राय़

अनुवादक
जयदीप शेखर

Cover photo credit: Image by liuzishan on Freepik

यक्ष का खजाना

'कुमार-बिमल' शृंखला की बँगला साहसिक कहानी
'जकेर धन' का हिन्दी अनुवाद

लेखक
हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक
जयदीप शेखर

PREVIEW COPY

जगप्रभा

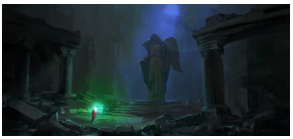

Cover Photo Credit: wizard-dark-dungeon-illustration_14402228.
Image by liuzishan on Freepik

Storyline illustrations are copied from the original Bengali book.

-: Hindi eBook :-

YAKSHA KA KHAJANA
(Treasure of the Demigod)
Hindi translation of the Bengali adventure story 'Jaker Dhan' from the 'Kumar-Bimal' series.
Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)
Hindi translation: Jaydeep Das
(Pen Name: Jaydeep Shekhar)
Copyright: Translator
Published by:
JAGPRABHA
Barharwa (SBG), JH- 816101
jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com
Price: ₹ 75.00
***

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और परालौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' श्रृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की श्रृंखला है। उनकी रची परालौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

यक्ष का खजाना 6
नरमुण्ड 6
यक्ष का खजाना 9
संकेतों का अर्थ 12
सत्यानाश! 17
परामर्श 21
चोर पर मोर 24
खिड़की पर काला चेहरा 28
बिल्ली के भाग से छींका टूटा 31
नयी आफत 34
यह कौन-सा चोर? 37
छातक 42
बिना बादल की बिजली 45
खासिया पहाड़ में 49
मानव, न पिशाच? 53
दो दहकती आँखें 56
पिशाच रहस्य 58
मौत के मुँह में 61
अद्भुत कारनामा 65
पेड़ की ओट से 70
रास्ते की बाधा 73
बाधा पर बाधा 77
अलौकिक काण्ड 79
खजाने का कमरा 84
अदृश्य विपत्ति 88
भूत, जन्तु या मानव? 90
कराली की एक और करतूत 94
भयानक कुआँ 99
परिणाम 103
टिप्पणियाँ 106

यक्ष का खजाना

नरमुण्ड

दादाजी के देहान्त के बाद उनके लोहे के सन्दूक में अन्यान्य चीजों के साथ एक छोटा बक्सा भी मिला। उस बक्से में जरूर कोई कीमती चीज होगी- सोचकर माँ ने उसे खोला, लेकिन उसमें थी एक पुरानी पॉकेट-बुक और पुराने कागज में लिपटी हुई कोई चीज। माँ कागज को खोलते ही उस चीज को दूर फेंककर जोर-जोर से चिल्लाने लगीं।

मैं भागा आया, "क्या हुआ, क्या हुआ माँ?"

माँ ने थर-थर काँपते हुए जमीन पर पड़ी उस चीज की ओर ईशारा करते हुए कहा, "कुमार, जल्दी से इसे फेंक आओ!"

मैंने झुककर देखा, एक नरमुण्ड पड़ा हुआ था जमीन पर! मैंने आश्चर्य के साथ कहा, "लोहे के सन्दूक में कंकाल की खोपड़ी! दादाजी बुढ़ापे में पागल हो गये थे क्या?"

माँ ने कहा, "इसे जल्दी से फेंककर आओ, मैं गंगाजल छिड़कती हूँ!"

मैंने खोपड़ी को खिड़की से घर की नाली में फेंक दिया। पॉकेट-बुक को उठाकर ताख पर रख दिया। माँ ने बक्से को फिर से सन्दूक में रख दिया।

कुछ दिनों बाद पड़ोसी कराली मुखर्जी का अचानक हमारे घर में आगमन हुआ। उन्हें हमारे घर में देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि मैंने सुन रखा था कि दादाजी के साथ उनकी बनती नहीं थी। दादाजी के रहते मैंने उनको कभी हमारे घर में आते हुए नहीं देखा था।

करालीबाबू बोले, "कुमार, तुम्हारे सिर पर अब किसी अभिभावक का हाथ नहीं रहा। तुम अभी नाबालिग हो। कितना भी तो तुम हमारे मुहल्ले के लड़के हो। अभी हम सबों का यह फर्ज बनता है कि हम तुम्हारी मदद करें। इसीलिए मैं आया हूँ।"

उनकी बातें सुनकर मुझे लगा, मैं उन्हें जितना बुरा समझता था, असल में उतने बुरे व्यक्ति वे नहीं थे। उनको धन्यवाद देते हुए मैंने कहा, “जब कभी जरुरत पड़ेगी, मैं आपके पास आऊँगा।”

करालीबाबू बैठे-बैठे इधर-उधर की बातें करने लगे। बातचीत के क्रम में मैंने उनसे कहा, “दादाजी के लोहे के सन्दूक में एक मजेदार चीज मिली है!”

करालीबाबू ने पूछा, “कौन-सी चीज?”

मैंने कहा, “चन्दन की लकड़ी के बक्से में कंकाल की एक खोपड़ी- ”

करालीबाबू की आँखें मानो चमक उठीं। वे जल्दी से बोल पड़े, “कंकाल की खोपड़ी?”

“हाँ, और एक पॉकेट-बुक।”

“वह बक्सा अभी कहाँ है?”

“लोहे के सन्दूक में ही।”

करालीबाबू ने उसी समय इस बात को दबाकर दूसरी बात छेड़ दी, लेकिन मैं खूब समझ रहा था कि वे अन्दर से बहुत उत्तेजित हो गये थे। कुछ देर के बाद वे चले गये।

उस रोज रात में अचानक मेरी नीन्द खुली। सुनायी पड़ा, मेरा कुत्ता बाघा जोर-जोर से भौंक रहा था। झल्लाकर मैंने दो-एक बार उसे डाँटा, लेकिन मेरी आवाज सुनकर उसका जोश और भी बढ़ गया- वह और भी जोर से भौंकने लगा।

इसके बाद किसी के पैरों की आहट सुनायी पड़ी। कोई तेज कदमों से छत से गुजर गया। आखिरकार दरवाजा खोलकर घर से बाहर आया। चारों तरफ देखा, कोई दिखायी नहीं पड़ा। लगा, मेरा भ्रम था। बाघा के गले से जंजीर खोलकर मैं फिर कमरे में आकर सो गया।

सुबह आँखें खुलते ही सुना, माँ जोर-जोर से चिल्ला रही थीं।

बाहर आकर पूछा, “क्या हुआ माँ?”

माँ बोलीं, “अरे कल रात चोर घुस आया था हमारे घर में!”

इसका मतलब रात जो मैंने आहट सुनी थी, वह भ्रम नहीं था।

माँ बोलीं, “देखो आकर, बड़े कमरे में लोहे के सन्दूक को खोलकर गया है।”

जाकर देखा, सही बात थी! लेकिन चोर कुछ खास नहीं ले जाया पाया था, सिर्फ चन्दन की लकड़ी वाला बक्सा गायब था।

मेरे मन में खटका-सा लगा! सन्दूक में इतनी सारी चीजों के रहते चोर सिर्फ वह बक्सा क्यों ले गया? यह भी याद आया कि सुबह इस बक्से की बात सुनकर ही करालीबाबू किस कदर उत्तेजित हो गये थे। इसका मतलब इस बक्से में कोई रहस्य छुपा है क्या? हो सकता है। वर्ना कंकाल की एक खोपड़ी को इतना सम्भालकर कोई लोहे के सन्दूक में क्यों रखने जायेगा भला?

माँ को बिना बताये भागकर बाहर गया। देखा, नाली में खोपड़ी तिरछी पड़ी हुई थी। ध्यान से उसकी जाँच करने के लिए मैंने उसे उठा लिया। खोपड़ी के एक तरफ गहरा काला रंग लगा हुआ था, लेकिन नाली का पानी लगने से बीच-बीच

में रंग हट गया था- और जहाँ-जहाँ रंग नहीं था, वहीं खुदे हुए कुछ अंक दिखायी पड़ रहे थे! उत्सुकतावश मैं खोपड़ी को फिर घर ले आया। साबुन लगाकर पानी से साफ करते ही खोपड़ी पर से सारा काला रंग हट गया। फिर मैंने आश्चर्य के साथ देखा कि खोपड़ी के उस हिस्से पर बहुत सारे अंक खुदे हुए थे।

अंक निम्न प्रकार से थे:

'27(6) 27(7) | 41(11) 34(3) 43 | 17(7) | 37(4) 23(7) | 48 43 44 | 37(7) 31.1 | 17(4) | 24 31.1 | 48(7) | 37/6 43 39 | 41(7) | 34 48 | 19 24 | 39 31.2 17 43 | 43/6 17(9) | 34(2) (3)49 36(7) | 2 28 | 19 24 | 37 43 | 39(5) {34 35} 34(7) 45 | 39(2)(11) 47(7) | 23 49 | 19 24 | 37 43 | 32(4) 36 | 37 {32 33} 43 | 5 48 17(7) | 36(4) 22(7) | 48(2) 32 | 49(2) 33| 24 41(4) 36 | 18(9) 34 36(7) | 37 43 | 43(2) {48 32}(2) | 41(3) 44(7) 19(2) |'

यक्ष का खजाना

इन विचित्र अंकों का मतलब क्या था? बहुत सोचा, लेकिन इनका सिर-पैर कुछ समझ नहीं पाया।

एकाएक दादाजी की पॉकेट-बुक की याद आयी। वह भी तो इस खोपड़ी के साथ थी, क्या उसमें इस रहस्य का कोई समुचित उत्तर नहीं होगा?

तुरन्त जाकर ताख से उस पॉकेट-बुक को उतारा। खोलकर देखा, उसके पन्ने शुरू से आखिरी तक लिखावट से भरे हुए थे। पहले पन्ने से पढ़ना शुरू किया, सोलह-सतरह पन्नों तक सामान्य बातें थीं। अचानक इसके बाद लिखा देखा:

'1920 साल, आश्विन माह।

आसाम से लौटते समय एक दिन हम लोग एक जंगल के बीच से गुजर रहे थे। सन्ध्या होने वाली थी, हम एक ऊँची पहाड़ी पर से उतर रहे थे। अचानक कुछ दूरी पर झाड़ियों में एक बड़ा-सा बाघ दिखायी पड़ा! वह घात लगाये हुए था- किसी पर झपटने के लिए! थोड़ी दूरी पर दिखायी पड़ा- एक सन्न्यासी रास्ते के किनारे पेड़ के नीचे सो रहे थे। बाघ उन्हीं पर घात लगाये था!

मैं जोर से चिल्ला पड़ा। मेरे साथ के कुलियों ने भी साथ दिया। सन्न्यासी की नीन्द खुल गयी और बाघ ने भी शोर सुनकर हमें देखा और फिर एक छलाँग मारकर झाड़ियों में ओझल हो गया।

जागने के बाद सन्न्यासी को मामला समझते देर न लगी। मेरे निकट आकर कृतज्ञ स्वर में बोले, "वत्स, तुम्हारे चलते आज मैं बाघ का निवाला बनने से बच गया!"

मैंने कहा, "महाराज, वन में भला इस तरह सोया जाता है?"

सन्न्यासी बोले, "वन ही तो मेरा घर-द्वार है वत्स!"

मैं बोला, "लेकिन अभी आपके प्राण चले जाते!"

सन्न्यासी बोले, "किन्तु नहीं गये वत्स। भगवान ने सही समय पर तुम लोगों को भेज दिया।"

पता चला, हम लोग जिस दिशा में जा रहे थे, सन्न्यासी को भी उधर ही जाना था। इसलिए सन्न्यासी को हमने साथ ले लिया।

सन्न्यासी दो दिन हमारे साथ रहे। यथासाध्य उनकी सेवा करने में मैंने कोई त्रुटि नहीं की। जिस दिन वे विदा हो रहे थे, उस दिन वे बोले, "देखो वत्स, तुम्हारी सेवा मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। तुमने मेरी प्राणरक्षा भी की है। जाने से पहले मैं तुम्हें एक रास्ता बता जाना चाहता हूँ।"

"किसका रास्ता?"

"यक्ष के खजाने का।"

मैंने उत्सुकता के साथ पूछा, "यक्ष का खजाना? यह कहाँ है महाराज?"

सन्न्यासी बोले, "खासी पहाड़ में।"

मैंने हताश होकर कहा, "किस जगह में है- यह मैं कैसे जानूँगा?"

सन्न्यासी बोले, "मैं ठिकाना बता देता हूँ। खासी पहाड़ के रूपनाथ गुफा का नाम सुने हो?"

मैंने कहा, "सुना हूँ। कहते हैं कि इस गुफा से होकर चीन देश में जाया जा सकता है और एक जमाने में चीन के एक सम्राट भारतवर्ष पर आक्रमण करने के लिए सेना लेकर इसी गुफा के रास्ते आये थे।"

सन्न्यासी बोले, "हाँ। इसी गुफा से पच्चीस कोस पश्चिम दिशा में जाने पर पुराने जमाने का एक मन्दिर मिलेगा। मन्दिर टूट गया है, कुछ दिनों बाद हो

सकता है कि उसका कोई नामो-निशान न मिले। एक समय में यहाँ बड़ा-सा एक मठ भी था, जिसमें बौद्ध सन्न्यासीगण रहा करते थे। उन दिनों एक राजा विदेशी शत्रु के साथ युद्धयात्रा पर जाने से पहले इस मठ में बहुमूल्य रत्नों का अपना खजाना रखकर गये थे, लेकिन युद्ध में उनकी सेना पराजित हो गयी। बाद में कहीं यह खजाना शत्रु पक्ष के हाथ न लग जाय- यह सोचकर राजा इस खजाने को एक गुप्त स्थान में छुपाकर एक यक्ष को पहरे पर बैठाकर स्वयं वहाँ से भाग गये। वे फिर लौटकर नहीं आये। वह खजाना अब भी वहीं पर है।" इतना कहकर सन्न्यासी ने उस बौद्धमठ तक पहुँचने का रास्ता विस्तार से बता दिया।

मैंने सन्देह व्यक्त किया, "हो सकता है कि इतने दिनों में कोई उस खजाना तक पहुँच चुका हो?"

सन्न्यासी बोले, "कोई नहीं पहुँचा है। वह बहुत दुर्गम इलाका है, वहाँ कोई बौद्धमठ भी था- यह कोई नहीं जानता और कोई भी आदमी उस तरफ नहीं जाता। कोई मठ तक पहुँच भी जाय, तो सारा जीवन खोजकर भी वह खजाना नहीं पा सकता; लेकिन तुम्हें खोजना नहीं होगा। खजाना ठीक कहाँ पर छुपाकर रखा हुआ है- यह जानने का उपाय सिर्फ मेरे पास है।" यह कहकर सन्न्यासी ने अपने झोले से कंकाल की एक खोपड़ी बाहर निकाली।

मैंने आश्चर्य से कहा, "इससे क्या होगा महाराज?"

सन्न्यासी बोले, "जो यक्ष धनरत्न के पहरे पर है, यह उसी की खोपड़ी है। इस खोपड़ी को मैंने मंत्रसिद्ध कर रखा है; जिसके पास भी यह खोपड़ी होगी, यक्ष उसे नहीं रोकेगा। खोपड़ी पर अंकों की जो ये पंक्तियाँ हैं, यह सांकेतिक भाषा है। इन संकेतों को समझने का उपाय मैं तुम्हें बता देता हूँ, इससे तुम जान सकोगे कि किस जगह पर खजाना रखा हुआ है।" इतना कहकर सन्न्यासी ने मुझे संकेतों को समझने का उपाय बता दिया।

इस घटना के बाद एक वर्ष तक मैंने बहुत सोच-विचार किया, लेकिन अकेले इस दुर्गम यात्रा पर जाने का साहस नहीं जुटा पाया। अन्त में, अपने पड़ोस के युवक कराली को भरोसे में लेकर उसे सारी बात बताते हुए बोला, "कराली, तुम अभी जवान हो, तुम यदि मेरे साथ इस यात्रा पर चलो, तो तुम्हें भी मैं उस खजाना में से हिस्सा दूँगा।"

करालीबेईमान है- यह मैं नहीं जानता था। वह धोखे से उस खोपड़ी को मुझसे हासिल करने के पीछे पड़ गया। दो-एक बार आदमी लगवाकर उसने मेरे घर में चोरी भी करवाई, लेकिन वह सफल नहीं हुआ। अच्छा हुआ था कि मैंने उसे यक्ष के खजाने का पता नहीं बताया था।

खासी पहाड़ जाने का इरादा मैंने त्याग ही दिया है। इस बुढ़ापे में धन-सम्पत्ति की लालच में किसी अनजानी जगह पर जाकर अन्त में क्या बाघ-भालू का शिकार बनकर प्राण गँवाऊँ? किसी को साथ लेने में भी डर लगता है- क्या पता, खजाने की लालच में मित्र ही मेरी हत्या कर दे!

इतना कर रहा हूँ कि इस पॉकेट-बुक में सारी बातें मैंने लिख दी। भविष्य में शायद यह विवरण मेरे वंश के किसी के काम आये, लेकिन मेरे वंश का कोई अगर सही में उस बौद्धमठ की यात्रा करता है, तो जाने से पहले वह विपत्तियों के बारे में भी भली-भांति सोच ले। इस काम में कदम-कदम पर जान का खतरा हो सकता है।'

पॉकेट-बुक हाथों में लेकर मैं हतप्रभ बैठा रहा।

संकेतों का अर्थ

ओह, करालीबाबू कितने खतरनाक आदमी थे! दादाजी के साथ उन्होंने चालबाजी करने की कोशिश की थी, लेकिन पार नहीं पा सके। इतने दिनों बाद भी उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी थी। मैं समझ गया कि उस दिन वे उस खोपड़ी का अता-पता जानने के लिए ही हमारे घर में आये थे। रात में इसे चुराने के लिए ही हमारे घर में चोर घुसे थे- इसमें भी कोई सन्देह नहीं है। यह तो अच्छा हुआ था कि खोपड़ी को मैंने घर के पीछे की नाली में फेंक रखा था!

अभी क्या किया जाय? खजाने का पता तो इस खोपड़ी पर ही लिखा हुआ था, लेकिन बहुत दिमाग लगाकर भी मैं अंकों का सिर-पैर कुछ समझ नहीं पा रहा था। पॉकेट-बुक के सारे पन्नों को पलटकर देख लिया, कहीं भी दादाजी ने इन संकेतों को समझने की विधि का जिक्र नहीं कर रखा था। बहुत गुस्सा आया दादाजी पर। असली चीज को ही समझने का उपाय नहीं लिख रखा था!

फिर सोचकर देखा, संकेतों को जानकर भी मैं भला क्या कर लेता? मेरी उम्र है सतरह साल। बारहवीं में पढ़ता हूँ। जीवन में कभी कोलकाता से बाहर नहीं गया। कहाँ है आसाम, कहाँ है खासी पहाड़[1] और पहाड़ में कहाँ पर है 'रूपनाथ की गुफा'- यह सब खोज निकालना मेरे बस में तो है नहीं! ऊपर से भयानक जंगल, जहाँ बाघ, भालू, हाथियों का बसेरा है! पुराने जमाने का एक बौद्धमठ, उसके अन्दर यक्ष का खजाना- यह तो अपने-आप में एक भुतहा मामला है! वहाँ जाकर मैं क्या अन्त में अलीबाबा के भाई कासिम की तरह खजाने की लालच में प्राण गँवाऊँ? इस बारे में सोचकर ही मेरी धड़कनें बढ़ गयीं!

अचानक बिमल की याद आयी। बिमल मेरा गहरा दोस्त था और मेरे मुहल्ले में ही रहता था। मुझसे उम्र में तीन साल बड़ा था, इस साल बी.ए. देगा। बिमल-जैसा तेज-तर्रार लड़का मैंने दूसरा नहीं देखा। उसके शरीर में भी असुरों-जैसी ताकत थी- रोज कुश्ती लड़ता था, दो सौ दण्ड और तीन सौ बैठक लगाता था। इस उम्र में ही बहुत-सी जगह घूम आया था वह- अभी पिछले साल ही तो आसाम गया था। उससे मैं कोई बात नहीं छुपाता था। तय किया कि जाना हो या न हो, एक बार बिमल को यह खोपड़ी दिखा दूँ।

शाम के समय बिमल के घर जाकर हाजिर हुआ। उस वक्त वह बैठकर अपनी बन्दूक की नली साफ कर रहा था। मुझे देख बोला, "अरे, कुमार आया है! कैसे आना हुआ भाई?"

मैंने कहा, "एक चक्कर में पड़ गया हूँ भाई।"

"कैसा चक्कर?"

मैं खोपड़ी निकालकर कहा, "यह देखो!"

बिमल कुछ पल अवाक होकर खोपड़ी की ओर देखता रहा, फिर बोला, "अब यह क्या है?"

मैंने पॉकेट-बुक उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, "मेरे दादाजी की डायरी! पढ़ते ही सब समझ जाओगे।"

बिमल बोला, "थोड़ा-सा ठहरो, पहले बन्दूक साफ कर लूँ। कल चिड़िये के शिकार पर गया था, बन्दूक में काफी गन्दगी जम गयी है।"

बन्दूक साफ कर हाथ धोने के बाद बिमल फिर बोला, “बात क्या है कुमार? तुमने किसी तांत्रिक गुरू से दीक्षा ले ली है क्या? तुम्हारे हाथ में कंकाल की खोपड़ी क्यों?”

मैंने कहा, “पहले पॉकेट-बुक को पढ़कर देखो न- ”

“अच्छी बात है।” कहकर बिमल ने पॉकेट-बुक को पढ़ना शुरू कर दिया। थोड़ी देर में ही देखा, उसके चेहरे पर विस्मय एवं कौतूहल के भाव तैरने लगे।

पढ़ना खत्म कर बिमल ने जल्दी से खोपड़ी को हाथों में लिया और घुमा-फिराकर उसे देखने लगा। फिर एक गहरी साँस छोड़कर बोला, “गजब मामला है!”

मैंने पूछा, “अंकों से कुछ समझ में आ रहा है?”

बिमल बोला, “ऊँहू!”

“मुझे भी कुछ समझ में नहीं आया।”

“लेकिन मैं आसानी से हार नहीं मानूँगा। अभी तुम घर जाओ कुमार, खोपड़ी मेरे पास ही रहने दो। तुम सुबह आना।”

मैंने कहा, “लेकिन बहुत सावधान!”

“क्यों?”

मैंने बताया, “कराली मुखर्जी इस खोपड़ी को चुराने के लिए रात तुम्हारे घर में घुस सकते हैं।”

“मुझे इतनी आसानी से कोई बेवकूफ नहीं बना सकता भाई!”

“वह मैं जानता हूँ, लेकिन फिर भी कहते हैं न- सावधान को मार नहीं।”

अगले दिन सुबह का उजाला होते ही मैं बिमल के घर भागा गया। उसके घर में मेरा बेरोक-टोक आना-जाना था। सीधे उसके पढ़ने के कमरे में जाकर देखा, बिमल पढ़ाई के टेबल पर झुककर ध्यान से कुछ लिख रहा था- खोपड़ी उसके सामने टेबल पर रखी हुई थी। मेरी आहट सुनकर उसने पहले तो चौंककर खोपड़ी को उठाकर छुपाने की कोशिश की, फिर मुझे देख आश्वस्त होकर बोला, “ओह, तुम हो! मैंने समझा, कोई और है!”

“कल तो बहुत साहस दिखा रहे थे, आज क्यों डर रहे हो?”

“कल? कल मामले की गहराई नहीं समझ पाया था। आज समझा। हम लोगों को अब से बहुत सावधान होकर काम करना होगा- किसी को कानों-कान कोई खबर नहीं होनी चाहिए!”

“अंकों से क्या समझ में आया?”

“जितना समझना था, सब समझ गया हूँ।”

मैं तो मारे खुशी के उछल पड़ा। चिल्लाकर बोला, “सब समझ गये! सच में?”

बिमल बोला, “चुप, चिल्लाओ मत! कौन कहाँ से सुन ले- कहा नहीं जा सकता। शान्त होकर यहाँ बैठो।”

मैं एक कुर्सी खींचकर उसके पास बैठते हुए बोला, “बताओ मुझे, खोपड़ी पर क्या लिखा है?”

बिमल ने धीरे-धीरे बताना शुरू किया, “शुरू में मैं भी कुछ समझ नहीं पाया था। प्रायः चार घण्टों की कोशिश के बाद जब हताश हो चला था, तब अचानक से एक बात याद आ गयी- बहुत दिनों पहले एक अँग्रेजी किताब में पढ़ी थी। उस किताब में नाना प्रकार की सांकेतिक लिपियों के गुप्त रहस्य के बारे में बताया गया था। उसी में जिक्र था कि यूरोप के चोर-डाकू अक्सर ऐसे संकेतों का इस्तेमाल किया करते थे। वे Alphabet अर्थात् वर्णमाला को संख्या अर्थात् 1,2,3 के रूप में लेते थे। यानि one होगा A, two होगा B, three होगा C, इसी प्रकार से। मैंने सोचा, इस खोपड़ी पर भी उसी नियम से संकेत लिखे गये होंगे। इसके बाद देखा कि मेरा अनुमान गलत नहीं था। फिर तो संकेतों को आसानी से पढ़ डाला मैंने।”

मैंने उत्सुकता से पूछा, “पढ़कर क्या समझे?”

बिमल ने एक कागज मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा, “खोपड़ी के संकेत कुल चौंतीस भागों में हैं। मैंने उन्हें इस रूप में सजाया है।”

कागज पर ये शब्द लिखे हुए थे-

‘टूटे । मंदिर । के । पीछे । सरल । पेड़ । की । जड़ । से । पूरब । में । दस । गज । बढ़कर । रूको । दाहिने । आठ । गज । पर । बुद्धदेव । बांये । छह । गज । पर । तीन । पत्थर । उसके । नीचे । सात । हाथ । खोदने । पर । रास्ता । मिलेगा।’

पढ़ने के बाद मैं मन-ही-मन बिमल की बुद्धिमता की तारीफ किये बिना नहीं रह सका।

बिमल बोला, “इस सांकेतिक लिपि किस तरह से लिखा गया है, वह मैं तुम्हें ठीक से समझाता हूँ- सुनो। हमारी हिन्दी भाषा में ‘अ’ से शुरू करके बावन वर्ण हैं। उन वर्णों को 1,2,3 के रूप में उसी क्रम में अपनाया गया है। या यूँ कहो कि 52 वर्णों को 1 से लेकर 52 तक क्रमांक दे दिया गया है। अर्थात्, 1 हुआ अ, 2 हुआ आ, 17 हुआ क, 52 हुआ ज्ञ- इसी प्रकार।

“‘आ’-कार, ‘ए’-कार जैसी मात्राओं को 1 से लेकर 13 तक क्रमसंख्या दी गयी है और जहाँ इन मात्राओं की जरुरत पड़ी है, वहाँ वर्ण की क्रमसंख्या के साथ ब्रैकेट के अन्दर मात्रा की क्रमसंख्या लिख दी गयी हैं। जैसे, ‘म’ का वर्ण क्रमांक है- 41 और ‘अनुस्वार’ (ं) का मात्रा क्रमांक है- 11, तो ‘41(11)’ को तुम्हें ‘मं’ पढ़ना होगा। ‘द’ का वर्ण क्रमांक है- 34 और ‘ह्रस्व इ-कार’ मात्रा का क्रमांक है- 3, तो ‘34(3)’ बनेगा- ‘दि’। ‘र’ का वर्ण क्रमांक 43 है। इस तरह से ‘मंदिर’ को यहाँ लिखा गया है- ‘41(11) 34(3) 43’।

“संयुक्त अक्षरों के लिए ‘मध्यमा’ ब्रैकेट का इस्तेमाल हुआ है, जैसे- ‘बुद्धदेव’ में ‘द्ध’ लिखने के लिए ‘द’ और ‘ध’ के वर्ण क्रमांकों को ‘मध्यमा’ ब्रैकेट के अन्दर लिख दिया गया है- ‘{34 35}’।

“तुम जानते हो कि ‘ड़’ और ‘ढ़’ को भले ‘ट’-वर्ग का वर्ण माना जाता है, लेकिन बावन वर्णों की गिनती में इन्हें शामिल नहीं किया जाता, इसलिए ‘ट’-वर्ग के अन्तिम वर्ण ‘ण’ के क्रमांक 31 में दशमलव लगाकर 1 और 2 संख्याओं को लिखकर ‘ड़’ और ‘ढ़’ बनाये गये हैं- यानि ‘31.1’ को हमें ‘ड़’ पढ़ना होगा और ‘31.2’ को ‘ढ़’।”

एक बार और परखने के ख्याल से मैंने खोपड़ी को हाथ में लिया, लेकिन दुर्भाग्य से वह फिसलकर संगमर्मर के फर्श पर धड़ाम-से जा गिरी। जल्दी से उठाकर मैंने उस पर नजर दौड़ाई और मेरे मुँह से निकला, “जाः! खोपड़ी का एक हिस्सा चटक गया!”

बिमल ने पूछा, “कौन-सा हिस्सा?”

मैंने बताया, “शुरुआती छह घर- ‘टूटे मन्दिर के पीछे सरल पेड़’ तक!”

बिमल बोला, “यह दुर्घटना अगर पहले घटती, तो सब बेकार हो जाता। खैर, अभी कोई डर नहीं है- संकेतों को मैंने कागज पर उतार लिया है, लेकिन हमें सावधान रहना होगा। संकेतों को रखकर इनके अर्थ को अभी ही नष्ट कर देना होगा।” कहकर उसने अर्थ लिखे हुए कागज को फाड़कर उसकी चिन्दियाँ बना दी।

“जब जरुरत होगी, पाँच मिनटों की कोशिश में ही हम लोग संकेतों का अर्थ ठीक समझ लेंगे, जबकि इन्हीं संकेतों को देखकर कोई दूसरा कुछ नहीं समझ पायेगा।” आगे उसने कहा।

सत्यानाश!

मैंने कहा, “बिमल संकेतों का अर्थ तो हम समझ गये, लेकिन अभी हम लोग करेंगे क्या? क्या हम- ”

बिमल रोककर बोला, “इसमें लेकिन-वेकिन कुछ नहीं है कुमार, हमें जाना ही होगा! इतना बड़ा रहस्य हमारे हाथ लगा है, इसकी सच्चाई जाने बिना मुझे चैन नहीं मिलने जा रहा।”

मैंने कहा, “हमारे साथ कौन जायेगा?”

“कोई नहीं, सिर्फ तुम और मैं।”

“लेकिन वह बहुत दुर्गम इलाका है, कुछ लोगों को साथ लिये बिना जाना उचित होगा वहाँ?”

बिमल बोला, “कुछ दुर्गम नहीं है, रास्ता जाना हुआ है मेरा। ‘रूपनाथ की गुफा’ तक ठीक पहुँच जायेंगे हम। उसके बाद का रास्ता कैसा होगा- पता नहीं, लेकिन पता लगाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। तुम्हें खतरा महसूस हो रहा है? डरने की जरुरत नहीं! खतरे से डरने पर मनुष्य आज यहाँ तक नहीं पहुँच पाता। सीधे रास्ते पर तो बच्चा भी चल सकता है, उसमें क्या बहादूरी है? खतरे की अग्निपरीक्षा को जो हँसते हुए पार करता है, दुनिया में सही मायने में मनुष्य वही है!”

मैंने कहा, “लेकिन बहादूरी दिखाने के चक्कर में प्राण गँवाना क्या बुद्धिमानी होगी? मैं कोई कायर नहीं हूँ- तुम जहाँ कहोगे, मैं चलने के लिए तैयार हूँ, लेकिन

रास्ता जाने बिना अन्धे के समान आगे बढ़ जाना ठीक नहीं है। छलाँग लगाने से पहले देख लेना चाहिए कि हम कहाँ जाकर गिरेंगे।"

"वो सब मैंने सोच-विचार कर लिया है, अब कोई चिन्ता नहीं!"

"तो कब चलने का इरादा है?"

"मैं तो तैयार बैठा हूँ। कल कहो, तो कल, परसों कहो, तो परसों!"

"इतनी जल्दी? चलने से पहले कुछ बन्दोबस्त नहीं करना होगा?"

"बन्दोबस्त क्या करना है! हम वहाँ कोई रहने के लिए तो जा नहीं रहे। ऐसे कामों में सामान वगैरह जितना कम हो, उतना अच्छा। दो बैग और हम दो प्राणी- बस!"

"रास्ता क्या होगा?"

बिमल बोला, "हमें कामरूप पार करके खासी पहाड़ की चढ़ाई करनी होगी। खासी पहाड़ के पास जुड़वाँ भाईयों-जैसा एक और पहाड़ है, उसका नाम जयन्ती है। इनके उत्तर में है- कामरूप और नवग्राम। पूरब में है- उत्तरी काछार, नागा पर्वत और कपिली नदी। दक्षिण में है- श्रीहट्ट और पश्चिम में गारो पहाड़।"

"खासी पहाड़ बहुत ऊँचा है?"

"हाँ, ऊँचा तो है! कहीं चार हजार, कहीं पाँच हजार और कहीं साढ़े छह हजार फुट ऊँचा है। पहाड़ के भीतरी हिस्सों में बहुत सारे जलप्रपात हैं, जिनमें से चेरापूँजी के पास 'मुसमाई' और शिलाँग शहर के पास 'विडनस' प्रपात बड़े हैं। पहले की ऊँचाई एक हजार आठ सौ फुट है और दूसरे की छह सौ फुट। ऊँचाई के मामले में पहले वाला प्रपात दुनिया में दूसरा स्थान रखता है। पहाड़ में गर्म जल के सोते भी हैं। खासी पहाड़ में शीत और वर्षा के अलावे किसी और ऋतु का प्रभाव अनुभव नहीं होता- आँधी-वर्षा तो लगी ही रहती है। वैशाख और ज्येष्ठ महीनों में वर्षा न होने तक बसन्त का थोड़ा आभास मिलता है। खासी पहाड़ का 'चेरापूँजी' तो वर्षा के लिए ही प्रसिद्ध है।"

फिर थोड़ा हँसकर बिमल बोला, "सिर्फ बाघ-भालू ही क्यों, वहाँ के जंगलों में हाथी, गैण्डे, जंगली भैंस, जंगली सूअर- सब पाये जाते हैं; हाँ, साँप बहुत कम हैं।"

मैंने सिर खुजाते हुए कहा, "वही तो।"

बिमल ने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा, "कुमार, तुम कभी कोलकाता से बाहर नहीं गये हो इसलिए जंगल को तुम जितना भयानक समझ रहे हो, वास्तव में

उतना भयानक वह नहीं है। फिर मैं साथ रहूँगा, डरने की क्या बात है? जानते हो न कि इस उम्र में ही मैंने बड़े-बड़े जानवरों का भी शिकार किया है। मेरे पास दो बन्दूकों का 'पास' है, एक तुम्हें दे दूँगा। तुमने भले अब तक शिकार नहीं किया है, लेकिन बन्दूक चलाना तो मैंने तुम्हें बहुत पहले ही सिखा दिया है। इसी बहाने तुम्हारी शिक्षा की परीक्षा भी हो जायेगी।"

उस दिन और कुछ न कहकर मैं घर की ओर चल पड़ा। मन में डर तो लग रहा था, लेकिन आनन्द भी बहुत आ रहा था। नयी-नयी जगहों को देखने की मेरी बहुत इच्छा थी। किताबों में विभिन्न देशों की तस्वीरें देखकर और वहाँ के बारे में पढ़कर मेरा मन उड़ चलने को करता था। कभी-कभी लगता था- रॉबिन्सन क्रूसो

की तरह किसी वीरान टापू पर कुटिया बनाकर अपनी मर्जी के दिन पर दिन बिताऊँ, कभी लगता- सिन्दबाद जहाजी की तरह रॅक[2] चिड़िये के साथ आसमान में उड़ूँ, व्हेल मछली की पीठ पर खाना पकाऊँ और द्वीपवासी वृद्ध को पटककर उसे काबू में कर लूँ। फिर कभी लगता, पनडुब्बी में सवार होकर समुद्र में गहरे जाऊँ और पातालपुरी का खजाना लूट लाऊँ। ऐसी कितनी ही इच्छाएं मेरे मन में जागती थीं- सबके बारे में बता नहीं सकता। बताने से आप लोग मेरा मजाक उड़ाने लगेंगे।

असली बात यह थी कि यक्ष का खजाना पाने के साथ-साथ एक नयी जगह देखने का आनन्द मुझे तरोताजा किये दे रहा था। मन में जो भी डर-भय था, इस आनन्द की लहरों से वह तिरोहित हो गया।

घर के पास पहुँचते ही हमारा कुत्ता बाघा जीभ निकालकर दुम हिलाते हुए मेरी अगवानी के लिए पहुँच गया।

मैंने कहा, "क्यों रे बाघा, मेरे साथ खासी पहाड़ चलोगे?"

मानो बाघा ने मेरी बात समझ ली। पिछले दोनों पैरों पर खड़े होकर उसने अगले दोनों पैर मेरी कमर पर टिका दी और मेरा मुँह चाटने के लिए अपना मुँह बढ़ा दिया। मैंने जल्दी से उसका मुँह हटाकर उसे नीचे किया।

मेरा यह बाघा विलायती नहीं, देशी कुत्ता था, लेकिन देखकर समझ पाना मुश्किल था। अच्छी देखभाल करने से देशी कुत्ता भी शानदार बन सकता है- बाघा इसी का प्रमाण था। उसका डील-डौल तगड़ा था, शरीर का रंग पीलापन लिये भूरा था, जिस पर काले धब्बे थे। डर किस चिड़िया का नाम है- यह बाघा नहीं जानता था, शरीर में ताकत भी बहुत था। एक बार हाउण्ड नस्ल का एक विलायती कुत्ता बाघा के पीछे पड़ा था, लेकिन बाघा के एक हमले में ही उसे भाग जाना पड़ा था। मैंने तय किया, बाघा को भी हम साथ ले चलेंगे।

अगली सुबह अभी मेरी नीन्द नहीं खुली थी कि अचानक किसी ने आवाज देकर मुझे जगाया। आँखें खोलकर देखा, पास में बिमल खड़ा था।

मैंने आश्चर्य से कहा, "क्या बात है, इतनी सुबह-सुबह?"

बिमल व्यग्रता से बोला, "सब बर्बाद हो गया!"

मैं धड़पड़ाकर उठ बैठा, "बर्बाद हो गया! ऐसा क्या हुआ?"

बिमल बोला, "बीती रात कंकाल की खोपड़ी कोई मेरे घर से चुरा ले गया!"